16

''ज्योति की संतान की नाईं चलो''

(5:7-14)

अध्याय 4 से 6 में पौलुस ने 5:7-14 में तीसरी बार इफिसियों को एक विशेष प्रकार से ''चलने'' का निर्देश दिया। उसने प्रेम से मसीही चलन पर अपनी चर्चा को एक निष्कर्ष के साथ समाप्त किया, जो अगले भाग का परिचय भी दिया है। मसीहियत को इफिसियों की पुरानी जीवन शैली से अलग बताते हुए उसने ज्योति की संतान की तरह चलने के लिए अंधकार में से लौट आने की चनौती दी।

ज्योति का फल लाना (5:7-10)

[7]इसलिए तुम उनके सहभागी न हो। [8]क्योंकि तुम तो पहले अंधकार थे परन्तु अब प्रभु में ज्योति हो, सो ज्योति की सन्तान की नाईं चलो। [9](क्योंकि ज्योति का फल सब प्रकार की भलाई, और धार्मिकता, और सत्य है)। [10]और यह परखो कि प्रभु को क्या भाता है?

आयत 7. जोड़ने वाले शब्द **इसलिए** के साथ स्पष्ट रूप से यह आयत पिछले विचार से मिलती है। परन्तु NASB के अनुवादकों ने इसके साथ एक नया वाक्य आरम्भ कर दिया है जो आयत 10 तक रहता है। परमेश्वर का क्रोध उन पर उण्डेला जाता है, जो शरीर के पापों में लगे हैं, जिस कारण पौलुस इफिसियों को यह याद रखने की चेतावनी दे रहा था कि वे कौन हैं। उसने उन्हें दूसरों से प्रेम करके परमेश्वर और मसीह का अनुसरण करने को कहा। इस निर्देश के बाद **उन के सहभागी न हो** शब्द आते हैं।

> इफिसियों में यहां पर संदर्भ स्पष्ट कर देता है कि जो बातें इसमें शामिल हैं वे अन्यजाति जगत के जीवन के सभी पहलुओं से सामान्य दूरी नहीं बल्कि इसके अनैतिक पहलुओं से विशेष रूप में अलगाव है। पाठक अन्यजातियों के पापों में आज्ञा न मानने वाले होकर उनके सहभागी होंगे जिससे उन पर आने वाला दण्ड उसे भी मिल जाए।[1]

आयत 8. वचन अन्यजातियों के पापों में भागीदार होने से इनकार करने का सकारात्मक कारण देता है: **क्योंकि तुम तो पहले अंधकार थे परन्तु अब प्रभु में ज्योति हो, सो ज्योति की सन्तान की नाईं चलो**। मसीही लोगों में उससे कुछ अन्तर था जो वे परमेश्वर की संतान बनने से पहले थे। जो कुछ वे पहले थे और जो मसीह में आने पर हो गए थे उसमें अन्तर को पत्र में पहले समझाया गया था (देखें 2:1-22)। ज्योति (पाप से उद्धार में मिलने वाला परमेश्वर का

जीवन) और अंधकार (शैतान और पाप से मिलने वाली मृत्यु) में अन्तर पुराने और नये दोनों नियमों में आम तौर पर देखा जाता है।[2] ज्योति और अंधकार में अन्तर मन परिवर्तन के सम्बन्ध में दिखाया गया है (कुलुस्सियों 1:12, 13; 1 पतरस 2:9)। इफिसियों में अंधकार अज्ञानता को (4:18) और अनैतिकता को (5:3-14) दर्शाता है, जबकि ज्योति सत्य और ज्ञान को (देखें 1:18) जो कि परमेश्वर को भाता है (5:10)।

पौलुस ने यह नहीं कहा कि इफिसी लोग ज्योति *में* थे, बल्कि उसने कहा कि ज्योति *थे*। एक समय में वे अंधकार थे, परन्तु प्रेरित ने कहा कि ''तुम अब प्रभु में ज्योति हो।'' ''प्रभु में'' या ''मसीह में'' उनके मन परिवर्तन की बात है जिसमें उन्होंने मसीह में बपतिस्मा लिया था (रोमियों 6:3; गलातियों 3:27)। पौलुस ने उन्हें उसी के अनुसार व्यवहार करने को समझाया जो वे मसीह में बन गए थे, यानी ''ज्योति की संतान की नाईं चलो।'' अविश्वासी लोगों की पहचान आज्ञा न मानने वालों के रूप में इतनी अधिक हो गई थी कि उन्हें ''आज्ञा न मानने वाले'' कहा जाता था (5:6)। सो इफिसी लोगों की पहचान ज्योति से इतनी अधिक हो गई थी कि उन्हें ''ज्योति की संतान'' कहा जाता था।

आयत 9. यह समझाना जारी रखते हुए कि ''ज्योति की संतान की नाईं चलना'' क्या है पौलुस ने लिखा, **(क्योंकि ज्योति का फल सब प्रकार की भलाई, और धार्मिकता, और सत्य है)**। कोष्ठक में रखी गई यह बात ज्योति को उपजाऊ भूमि या अच्छे पेड़ के रूप में दिखाती है जिसमें इसे ''फल'' लगता है। ज्योति का फल जो ''अंधकार के निष्फल कामों'' (5:11) से अलग है, में ''भलाई'' (*agathōsunē*) शामिल है, का अर्थ विशेष रूप में नैतिक ''भलाई'' है।[3] यह विचार 2:10 की झलक है, जहां पौलुस ने कहा, ''क्योंकि हम उसके बनाए हुए हैं; और मसीह यीशु में उन भले कामों के लिए सृजे गए, जिन्हें परमेश्वर ने पहिले से हमारे करने के लिए तैयार किया।'' ''भलाई'' आत्मा के फल का एक भाग है (गलातियों 5:22) और नये नियम में पौलुस द्वारा इसका इस्तेमाल दूसरों के साथ अपने सम्बन्ध में मसीही व्यक्ति की गतिविधियों के वर्णन के लिए किया गया है। (अन्य उपयोगों के लिए देखें रोमियों 15:14; 2 थिस्सलुनीकियों 1:11.)

''धार्मिकता'' (*dikaiosunē*) परमेश्वर द्वारा ठहराए गए मानक के साथ मेल खाते हुए वह करना है जो परमेश्वर और मनुष्य के सम्बन्ध में सही हो। ''सत्य'' (*alētheia*) का अर्थ ''ईमानदारी'' है जो कि ''झूठ का विपरीत'' है।[4] ''सत्य'' परमेश्वर का वचन भी है (यूहन्ना 17:17)। इफिसियों से ''प्रेम से सत्य'' बताना और ''अपने पड़ोसी से सच बोलने'' का आग्रह करते हुए पौलुस इन दोनों विचारों पर ज़ोर दे रहा था (4:15, 25)। ''तीनों गुणों में हर गुण [5:9] अपने आप में बहुत सामान्य है और पूरे मसीही जीवन के लिए हो सकता है।''[5]

आयत 10. और यह परखो, कि प्रभु को क्या भाता है को ज्योति की संतान की नाईं चलने के अर्थ की और व्याख्या के रूप में समझा जाता है। पौलुस ने आगे कहा, ''समझो, कि प्रभु की इच्छा क्या है'' (5:17)। ''परखो'' (*dokimazontes*) का सही अर्थ ''परखना, साबित करना, जांचना, अन्तर करना'' है।[6] यह परखने या साबित करने के लिए कि परमेश्वर को क्या भाता है और उसकी इच्छा को समझने के लिए एक मानक की आवश्यकता है। वह मानक परमेश्वर का वचन है। कुलुस्सियों 1:9, 10 में पौलुस ने प्रार्थना की कि मसीही लोग परमेश्वर

की इच्छा के ज्ञान से परिपूर्ण हो जाएं, उन्हें इसे समझने की बुद्धि मिले और उनका जीवन ऐसा हो जो परमेश्वर को भाए। पहले ज्ञान था; दूसरा समझ थी और तीसरा परमेश्वर को प्रसन्न करना था। पौलुस ने फिलिप्पियों को ''मसीह के सुसमाचार के योग्य'' चलने को प्रोत्साहित किया (फिलिप्पियों 1:27), यानी परमेश्वर के वचन के मानक से सीखकर चलने के लिए कहा।

प्रेरित यूहन्ना ने अपने पाठकों से कहा कि ''आत्माओं को परखो कि वे परमेश्वर की ओर से हैं कि नहीं'' (1 यूहन्ना 4:1)। इस परख के लिए एक मानक की आवश्यकता है और वह मानक परमेश्वर का प्रकाशन है। जब कोई व्यक्ति हर विचार, हर शब्द और हर काम को परमेश्वर की प्रकट की गई इच्छा से परखता है, तभी और केवल तभी उसे पता चलता है कि परमेश्वर को क्या भाता है। पौलुस ने कहा कि प्राचीनकाल के यहूदियों को परमेश्वर की इच्छा मालूम थी क्योंकि उन्हें व्यवस्था में से बताया गया था (रोमियों 2:18)। जब किसी व्यक्ति को परमेश्वर की प्रकट इच्छा का पता चल जाता है तो वह जान जाता है कि परमेश्वर को क्या भाता है। वचन के मानक के द्वारा जीवन की परिस्थितियों का सामना करते हुए उसे पता चल सकता है कि वह परमेश्वर को भा रहा है। आयत 10 के संदर्भ में भलाई, धार्मिकता और सत्य में ज्योति की संतान की नाई चलने का अर्थ यह जानना है कि प्रभु को क्या भाता है और वास्तव में वह करना है जो उसे भाने के लिए आवश्यक है।

अंधकार के कामों को नकारना और उलाहना देना (5:11-13)

[11]और अंधकार के निष्फल कामों में सहभागी न हो, वरन उन पर उलाहना दो। [12]क्योंकि उन के गुप्त कामों की चर्चा भी लाज की बात है। [13]पर जितने कामों पर उलाहना दिया जाता है वे सब ज्योति से प्रकट होते हैं, क्योंकि जो सब कुछ को प्रकट करता है, वह ज्योति है।

आयतें 11, 12. धार्मिकता और बुरी जीवन शैली में अन्तर पर ध्यान देते हुए पौलुस ने मसीही लोगों को समझाया कि **अंधकार के निष्फल कामों में सहभागी न हो, वरन उन पर उलाहना दो** (5:11)। परमेश्वर की संतान के रूप में हम ज्योति हैं, यानी हमारा जीवन ज्योति की संतान की नाईं है और हम ज्योति का फल देते हैं (5:8, 9)। इसके विपरीत जो लोग उसे नहीं जानते वे अंधकार में (5:8), आज्ञा न मानने वाले (5:6) हैं और उनकी पहचान ''अंधकार के निष्फल कामों'' से होती है।

''ज्योति की संतान'' को अंधकार के कामों में भाग नहीं लेना चाहिए बल्कि उन्हें उन पर उलाहना देना चाहिए। ''उलाहना'' का अनुवाद *elenchō* से निकले एक बहुआयामी शब्द से किया गया है जिसका अर्थ है ''दोषी ठहराना,'' ''डांटना,'' ''अनुशासित करना।''[7] 5:11-13 में ज़ोर अंधकार के कामो को, उसके लिए जो वे हैं, सामने लाने पर है। मसीही व्यक्ति निष्क्रिय होकर अंधकार को सहन नहीं कर सकता बल्कि वह सक्रिय होकर इस पर उलाहना देता है। नये नियम में चाहे साथी मसीही लोगों को समझाने के लिए इसका इस्तेमाल किया गया है (1 तीमुथियुस 5:20; तीतुस 1:9, 13), परन्तु संदर्भ यहां पर उन लोगों की बात करता है जो अंधकार के हैं अर्थात जो उद्धार पाए हुए नहीं हैं।

अनुवादित यूनानी वाक्यांश ''वरन उन पर उलाहना दो'' में ज़बर्दस्त ताड़ना की बात है। यह इस बात की घोषणा करता है कि मसीही लोग अंधकार के कामों में भाग न लें बल्कि बातों से और कामों से दोनों प्रकार से खुलेआम अंधकार को डांट लगाएं। कुछ व्याख्याकर्त्ताओं का मानना है कि अंधकार पर उलाहना देने का काम केवल मसीही लोगों की जीवन शैली से हो। वे अपने विचार का आधार आयत 12 के शब्दों को बताते हैं कि **क्योंकि उन के गुप्त कामों की चर्चा भी लाज की बात है।**[8] परन्तु अन्य स्थानों पर पौलुस द्वारा इस्तेमाल किया गया *elencho* शब्द बोलकर डांट की बात करता है (देखें 2 तीमुथियुस 4:2; तीतुस 2:15)।

''की चर्चा'' निरन्तर या बार-बार दोहराए जाने वाले कार्य का संकेत देता है। अंधकार के पाप मसीही लोगों के लिए आपस में या गैर विश्वासियों के सामने भी बात करने वाले विषय नहीं हैं। तौभी मसीही लोग ऐसे व्यवहार का सामना कर सकते हैं और उन्हें करना आवश्यक है। आज की संस्कृति में मसीही लोगों को अपने साथी मसीही लोगों के साथ अंधकार के पापों की चर्चा करते रहकर कि वे कितनी बुरी हैं, बल्कि कुप्रथा, बिगाड़, गर्भपात और अन्य पापों के विरुद्ध बोलना चाहिए। निश्चय ही मसीही व्यक्ति की जीवन शैली ऐसी होनी आवश्यक है जो अंधकार के उलट हो और जो अंधकार को उलाहना देती हो। परन्तु अंधकार के विरुद्ध बात करने को समय और स्थान भी है। धर्मी जीवन की सामर्थ को नज़रअन्दाज़ नहीं किया जा सकता परन्तु शब्दों की शक्ति से अंधकार को सामने लाया जा सकता है (देखें रोमियों 1:18-32)। एस. डी. एफ. सैलमण्ड का अवलोकन है:

> इस प्रश्न वाले काम की *गुप्तता* ही वह कारण है जिसके कारण इसे सरेआम डांटना आवश्यक है; और कहने का अर्थ यह है कि गुप्त में काफिरों का व्यवहार इतना बुरा है कि उसका नाम भी लेना निन्दनीय है; आवश्यकता इस बात की है कि उसे खामोशी से नज़रअन्दाज़ करने के बजाय खुलेआम डांट लगाई जाए ...।[9]

आयत 13. ज्योति से वह सामने आ जाता है जिसे अंधकार छुपा लेता है। जहां ज्योति चमकती है वहां **सब** काम **प्रकट होते हैं**। जब अंधकार के काम **ज्योति से प्रकट होते हैं** तो **जो सब कुछ को प्रकट करता है, वह ज्योति है।** मसीही लोग जब अंधकार के कामों के बुरे की बुरी प्रकृति को सामने लाते हैं तो वह अंधकार में रहने वालों को ''ज्योति'' बनने की पेशकश कर रहे होते हैं। यीशु ने कहा:

> दण्ड की आज्ञा का कारण यह है कि ज्योति जगत में आई है, और मनुष्यों ने अंधकार को ज्योति से अधिक प्रिय जाना क्योंकि उन के काम बुरे थे। क्योंकि जो कोई बुराई करता है, वह ज्योति से बैर रखता है, और ज्योति के निकट नहीं आता, ऐसा न हो कि उसके कामों पर दोष लगाया जाए। परन्तु जो सच्चाई पर चलता है, वह ज्योति के निकट आता है, ताकि उसके काम प्रकट हों, कि वह परमेश्वर की ओर किए गए हैं (यूहन्ना 3:19-21)।

उसने सच्चाई को ज्योति कहा और अंधकार को बुराई। जब लोग अंधकार की बुराई से प्रेम करते और ज्योति से घृणा करते हैं तो वे उस अंधकार में बने रहते हैं जो दण्ड का कारण बनती है। जो लोग सच्चाई की भलाई से प्रेम करते हैं वे ''ज्योति'' के पास आते हैं और उन्हें यह आश्वासन

मिलता है कि उन के कामों को परमेश्वर की ओर से स्वीकृत किया गया है।

चौकस रहना (5:14)

[14]इस कारण वह कहता है, ''हे सोने वाले जाग और मुर्दों में से जी उठ; तो मसीह की ज्योति तुझ पर चमकेगी।''

आयत 14. पौलुस ने कविता की तीन पंक्तियों को **''हे सोने वाले जाग और मुर्दों में से जी उठ; तो मसीह की ज्योति तुझ पर चमकेगी''** दोहराते हुए ''ज्योति की संतान'' के इस भाग का समापन किया। उसने कविता का परिचय **इस कारण वह कहता है** के साथ किया जो कि 4:8 में पवित्र शास्त्र के उद्धरण से पहले उसने इस्तेमाल किया था। परन्तु यह पंक्तियां बाइबल में और कहीं नहीं मिलतीं। पुराना नियम में यह बात शायद यशायाह 60:1 में मिलती है; परन्तु वहां पर यशायाह अपने लोगों पर ज्योति लाने के लिए परमेश्वर को महिमा देने की बात कर रहा है। पौलुस ने यह कविता अपने पाठकों को एक चुनौती और प्रतिज्ञा के रूप में दी।

कुछ व्याख्याकर्त्ताओं का विचार है कि पौलुस पुराने नियम की एक या अधिक आयतों को अपने शब्दों में लिख रहा था। नये नियम के लेखकों के लिए उद्धरणों को लेकर अपने शब्दों में लिखना कोई नई बात नहीं थी और नये पुराने और दोनों नियमों में ऐसी वाक्य रचना की पृष्ठभूमि का सुझाव मिलता है। ज्योति को अपने लोगों की सेवा के लिए परमेश्वर के आने के साथ जोड़ा गया है (देखें व्यवस्थाविवरण 33:2; भजन संहिता 50:2; 80:1-3, 7, 19), और मसीह को आम तौर पर ज्योति के रूप में दिखाया गया है (देखें लूका 2:32; यूहन्ना 1:4-9; 3:19-21; 8:12; 9:5; 12:46; प्रकाशितवाक्य 1:16)।

अन्यों का मत है कि पौलुस परमेश्वर की प्रेरणा रहित किसी स्रोत से (प्रेरितों 17:28 की तरह) शायद किसी अप्रामाणिक लेख, किसी आरम्भिक मसीही भजन या यीशु की किसी अलिखित बात से उद्धृत कर रहा था।[10] हम पक्का नहीं कह सकते कि पौलुस ने यह कविता कहां से ली परन्तु पौलुस द्वारा इसे इस्तेमाल करने से यह स्पष्ट लगता है। जो लोग मसीह के संदेश को मानते हैं चाहे वे आत्मिक मृत्यु की नींद में हैं पर फिर भी उन्हें पुनरुत्थान की प्रतिज्ञाएं मिली हैं। मसीह का जीवन और ज्योति (देखें यूहन्ना 8:12; रोमियों 6:1-4) उन लोगों की राह देखते हैं जो अंधकार के अपने कामों को छोड़कर उनके साथ मिल जाएं जो ''ज्योति की सन्तान की नाईं'' चलते हैं (5:8)।

> लेखक अपने पाठकों को समझाना चाहता है कि कलीसिया का जीवन उस समाज के मूल्यों के वैसे ही उलट हो जैसे ज्योति अंधकार के उलट होता है और उसके साथ कोई मेल नहीं रखता ...। आस पास के अंधकार से भ्रष्ट होने के बजाय विश्वासियों को इस पर अपना प्रभाव डालने का आग्रह किया गया है। पाठक इस बात को दिखाते हुए कि जीवन कैसा होना चाहिए दूसरों के लिए एक प्रकाश पुंज के रूप में चमकने वाला समुदाय होने से कम नहीं है ... ताकि ज्योति अपने आस-पास के अंधकार को बदल सके। ज्योति के साथ लड़ाई में अंधकार अन्त में जीत नहीं सकता क्योंकि ज्योति का देने वाला जी उठा मसीह है।[11]

प्रासंगिकता

ज्योति की सन्तान (5:7-14)

5:7-14 में पौलुस ने आयत 8 में ''ज्योति की संतान की नाईं'' चलने के लिए अपने पाठकों से आग्रह करते हुए तीसरी बार बताया कि मसीही लोगों को कैसे ''चलना'' चाहिए।

अन्तर। पवित्र शास्त्र ''ज्योति'' और ''अंधकार'' के बीच अन्तर दिखाता है। ''ज्योति'' परमेश्वर के मार्ग, उसकी सामर्थ और मसीही लोगों को कहा गया है। ''अंधकार'' शैतान, संसार के ढंग, उसकी सामर्थ और खोए हुओं को कहा गया है।[12] ''ज्योति'' और ''अंधकार'' मसीह और बुराई के प्रतीक हैं (यूहन्ना 1:1-5, 9; 3:19-21; 8:12; 12:35, 36)। इसके अलावा ''ज्योति'' और ''अंधकार'' से सम्बन्ध विश्वासी मसीही लोगों को अविश्वासी लोगों से अलग करते हैं (1 यूहन्ना 2:4-11)।

आश्वासन। ज्योति में चलना मसीही व्यक्ति को परमेश्वर के साथ सही सम्बन्ध होने और पाप से निरन्तर शुद्ध किए जाने का आश्वासन देता है (1 यूहन्ना 1:5-9)।

ज्ञान। मसीही लोगों को पता होता है कि वे ''ज्योति'' में चल रहे हैं जब वे ज्योति का फल लाते हैं (5:9), उसे पाते हैं जो परमेश्वर को भाता है (5:10) और अंधकार के कामों को नंगा करते हैं (5:11-14)। मसीही लोगों के परमेश्वर को अपने जीवन सौंपने और उसके लोगों के रूप में रहने पर, वह उन्हें सही किस्म का फल देने में सहायता करता है। पवित्र शास्त्र के अध्ययन के द्वारा उन्हें समझ आता है कि परमेश्वर को क्या भाता है। मसीही लोग जब दृढ़ता और दयालुता से बुराई के विरुद्ध बोलते और सही जीवन बिताते हैं तो समाज पर इसका बड़ा असर होता है।

''प्रभु में ज्योति।'' पौलुस ने इफिसयों को ''प्रभु में ज्योति'' बताया (5:8)। जब कोई मसीह में बपतिस्मा लेता है तो उसे परमेश्वर से मिला दिया जाता है, पाप से छुड़ाया जाता है और हर प्रकार की आत्मिक आशिष का प्राप्तकर्त्ता बना दिया जाता है और वह जगत के लिए ज्योति बन जाता है (देखें 1:3-14; 2:13-16; मत्ती 5:16)।

सारांश। मसीही लोग संसार में हैं, परन्तु वे संसार के नहीं हैं। कलीसिया संसार को अपनाती नहीं है बल्कि जिस प्रकार से ज्योति अंधकार में से निकल जाती है वैसे ही वह संसार का सामना करती है।

जे लॉकहर्ट

परमेश्वर के सदृश्य (5:1-14)

संसार के आस पास संतान की एक विशेषता यह है कि वे उन्हीं लोगों की नकल करते हैं जिन से वे प्रेम करते हैं। मां द्वारा अपने बच्चे से पूछे जाने पर कि वह क्या खाना पसन्द करेगा, उसका उत्तर हो सकता है, ''मैं वही खाऊंगा जो डैडी खा रहे हैं।'' बच्चों को असल बनने की परवाह नहीं होती बल्कि उन्हें अपने आदर्शों के जैसे बनने की अधिक परवाह होती है।

परमेश्वर की संतान के रूप में हम से कहा गया है कि ''परमेश्वर के सदृश्य बनो'' (5:1)। यदि हम परमेश्वर के जैसे बनना चाहते हैं तो हमारा जीवन कैसा होना चाहिए? 5:1-14 में

पौलुस ने कहा कि ''परमेश्वर के सदृश्य'' लोग दो प्रकार से करके, उसके जैसे होंगे।

1. *प्रेम की संतान* (5:1-7)। ''इसलिए प्रिय, बालको की नाईं परमेश्वर के सदृश्य बनो। और प्रेम में चलो; जैसे मसीह ने भी तुम से प्रेम किया और हमारे लिए अपने आपको दे दिया'' (5:1, 2)।

इस पहली विशेषता को समझने की कुंजी ''इसलिए'' से जुड़ी हुई है। यह शब्द हमें 4:32 में बताए गए नियम को पीछे की ओर धकेल देता है: ''और एक दूसरे पर कृपाल, और करुणामय हो, और जैसे परमेश्वर ने मसीह में तुम्हारे अपराध क्षमा किए।'' परमेश्वर को प्रेमी क्षमा करने वाले के रूप में दिखाया गया है। परमेश्वर का अनुकरण करने की पौलुस की आज्ञा को बेहतरीन ढंग से हम तब पूरा करते हैं, जब हम स्वयं प्रेमी क्षमा करने वाले बन जाते हैं। हमें कृपालु बनना आवश्यक है; हमें करुणामय होना आवश्यक है; न कठोर, न निर्दयी और न उदासीन। हमें क्षमा करने वाले बनना आवश्यक है। प्रेम को वास्तविकता इसी से मिलती है क्योंकि प्रेम जो क्षमा नहीं कर सकता वास्तव में वह प्रेम है ही नहीं।

मत्ती 18 में हमें इस नियम पर यीशु की अपनी व्याख्या मिलती है। पतरस ने प्रभु से पूछा था कि आदमी को अपने भाई को कितनी बार क्षमा करना चाहिए। यहूदी रब्बी यह बताते थे कि किसी को तीन बार क्षमा करना काफ़ी है; आखिर उसे उसकी ज़िम्मेदारी से मुक्त किया जा रहा है। शायद प्रभु को यह दिखाने करने के लिए कि वह उसके संरक्षण में कितना परिपक्व हो गया है, पतरस ने अपने ही प्रश्न का उत्तर सात बार क्षमा करने का सुझाव देकर, दे दिया। यीशु ने उत्तर दिया, ''मैं तुझ से यह नहीं कहता कि सात बार, बरन सात बार से सत्तर गुणा तक'' (मत्ती 18:22)। कहने का मतलब हिसाब रखना नहीं बल्कि व्यवहार है। क्षमा करने का व्यवहार परमेश्वर के प्रेम का अनुसरण करने का आधार है।

क्या हम ने परमेश्वर की गलती है? बेशक हम ने की है! हम ने उसका विद्रोह किया है, उसे तुच्छ जाना है उससे घृणा की है, उसे ठुकराया है। फिर भी उसने हमें क्षमा कर दिया है। क्रूस पर मसीह की मृत्यु परमेश्वर की ओर से स्पष्ट और वह क्षमा थी जिसे कमाया नहीं जा सकता (रोमियों 5:8)। ऐसी ही क्षमा हमें दिखानी आवश्यक है।

ऐसी क्षमा दिखाने का क्या कारण है? प्रेम। याद रखें कि पौलुस ने अध्याय 2 में क्या बताया था। उसने कहा था कि हम पापों में मरे हुए थे; हम इस संसार की जीवन शैली को अपनाते थे। हम आज्ञा न मानने वाले लोग थे; हम अपने शरीर की लालसा के अनुसार चलते थे। ''परन्तु परमेश्वर ने जो दया का धनी है; अपने उस बड़े प्रेम के कारण, जिस से उस ने हम से प्रेम किया। जब हम अपराधों के कारण मरे हुए थे, तो हमें मसीह के साथ जिलाया ...'' (2:4, 5)।

क्रूस से क्षमा एक वास्तविकता बन गई थी, परन्तु क्रूस को वास्तविकता परमेश्वर के प्रेम ने बनाया। जिस प्रकार परमेश्वर ने मसीह में हमें क्षमा किया है उसी प्रकार एक-दूसरे को क्षमा करने की पौलुस की ताड़ना के पीछे यही कारण था। इसी लिए पौलुस ने विनती की, ''इसलिए ... परमेश्वर के सदृश्य बनो। और प्रेम में चलो ...'' (5:1, 2)।

पौलुस ने हमें किसी को भी जिसने हमारा बुरा किया हो, क्षमा करने के लिए प्रेम में आगे बढ़ने की चुनौती दी। ऐसा करना कठिन है क्योंकि मन-मुटाव को जमा करते रहना और अपने अन्दर उन्हें सड़ने देना आसान है। क्षमा करने की परमेश्वर की इच्छा हमारा मानक है।

(1) नकल करने का उदाहरण। परमेश्वर को मालूम था कि हमें उसके जैसे बनने के लिए केवल समझाने से अधिक की आवश्यकता होनी थी। यानी हमें नकल करने के लिए एक नमूना चाहिए था। हर मसीही के लिए वह उदाहरण यीशु मसीह अर्थात परमेश्वर है जो मनुष्य बना। आप जानना चाहते हैं कि परमेश्वर कैसा है? आप जानना चाहते हैं कि परमेश्वर आप से कैसे प्रेम करता है? तो फिर यीशु को देख लें। उसने ''आप से प्रेम किया है और हमारे लिए अपने आपको दे दिया।'' प्रेम को यही बात अर्थात अपने आप को न कहना और किसी दूसरे के लिए अपने आपको दे देना ही प्रेम को गति देता है। हमारे प्रभु द्वारा दिखाया गया सच्चा प्रेम नि:स्वार्थ, त्याग भरा, बलिदानपूर्वक, विनम्रता से अपने अधिकारों को देने की इच्छा है ताकि किसी दूसरे को आशीष मिल सके।

निश्चय ही हमारे संसार के प्रेम का यह नमूना नहीं है। संसार का नमूना यह है: ''जब तक तुम मेरी आवश्यकताओं को पूरा करते हो, तुम आस पास रह सकते हो।'' संसार का प्रेम कारक पर आधारित है। यह कहता है, ''मैं तुम से प्रेम करता हूं क्योंकि प्रेम करने के लिए तुम अच्छे है''; ''मैं तुम से प्रेम करता हूं क्योंकि इससे मुझे अच्छा लगता है''; ''मैं तुम से प्रेम करता हूं क्योंकि तुम ने मुझे कोई दुख नहीं दिया या मेरी भावनाओं को आहत नहीं किया है।''

परमेश्वर का प्रेम ऐसा नहीं है। परमेश्वर वाला प्रेम कहता है, ''यदि तुम मुझे दुख दो, मेरे मित्र, तुम जो भी करो, बदले में तुम्हें प्रेम मिलेगा!'' परमेश्वर के लिए प्रेम कभी कारक से संचालित नहीं होता। प्रेम परमेश्वर की ओर से आता है, क्योंकि प्रेम करना उसका स्वभाव है।

(2) त्यागी जाने वाली बुराई। यदि हम परमेश्वर का अनुसरण करना चाहते हैं तो हमें प्रेम के कुछ विकृत रूपों को छोड़ना होगा (5:3, 4)।

प्रेम बारे संसार की सोच बिगड़ी हुई है। यह आत्म केन्द्रित है जैसा कि पौलुस द्वारा बताए गए पापों से दिखाया गया है। उदाहरण के लिए लैंगिक अनैतिकता लैंगिक पाप के हर रूप को अपना लेती है और अपने आप को संतुष्ट करने वाली है। अपनी पत्नी के साथ बेवफ़ाई करने वाले पति पर विचार करो। वह वह काम नहीं कर रहा हो सकता जो उसकी पत्नी की बेहतरी के लिए हो। वास्तव में जो कुछ वह कर रहा है वह उसकी अपनी कामनाओं और लालसाओं की तृप्ति करना है। यीशु ने ऐसे नमूने का पालन करने को हमें नहीं दिया।

''लोभ'' पहले तो पौलुस द्वारा दी गई इस सूची में बाहर से लगता है। वास्तव में यह भी बिगड़े हुए प्रेम का एक रूप ही है। दसवीं आज्ञा में कहा गया था, ''तू न किसी की पत्नी का लालच करना, न किसी के घर का लालच करना ...'' (व्यवस्थाविवरण 5:21)। लैंगिक अनैतिकता में ऐसे सम्बन्ध की लालसा या इच्छा करना हो सकता है जो सही न हो। ऐसे मामले में लालसा व्यक्ति से अपनी ही बेहतरी के लिए काम करवा सकती है, न कि अपने पड़ोसी की बेहतरी के लिए। यह अपने आप से प्रेम करने का एक रूप है जो अन्त में विकृत प्रेम है। आश्चर्य की बात नहीं कि पौलुस ने ऐसे कार्यों को परमेश्वर के लोगों के लिए ''नहीं'' बताया है (5:4)।

न केवल हमें ऐसे कामों से दूर रहना है बल्कि हमें इनकी बात भी नहीं करनी चाहिए। हमें अश्लीलता वाली बातें नहीं बोलनी चाहिए। (यहां हम विशेष रूप में कामुक टिप्पणियों की बात मानते हैं।) न ही हमें मूर्खताभरी बातें अर्थात ऐसी बातचीत में शामिल होना चाहिए जो अपने लोगों के लिए परमेश्वर के ऊंचे मानकों का मज़ाक और ठट्ठा उड़ाती हो। ''ठट्ठे'' शब्द यूनानी

शब्द से लिया गया है जिसका अर्थ है ''आसानी से बदल सकने वाला।'' कुछ लोग किसी भी बात या काम को अश्लील बना सकते हैं। ऐसी विकृत बातें परमेश्वर का अनुकरण करने वाले के जीवन को दागी बना सकती हैं। जो व्यक्ति उस प्रकार से प्रेम नहीं कर सकता जैसे परमेश्वर करता है और उसका मुंह गंदा है वह उसे तुच्छ मानता है जिसे परमेश्वर प्रिय जानता है।

विकृत प्रेम के जीवन में बने रहने वालों को पवित्र शास्त्र की कड़ी चेतावनी है।

> क्योंकि तुम यह जानते हो, कि किसी व्यभिचारी, या अशुद्ध जन, या लोभी मनुष्य की, जो मूरत पूजने वाले के बराबर है, मसीह और परमेश्वर के राज्य में मीरास नहीं।
>
> कोई तुम्हें व्यर्थ बातों से धोखा न दे; क्योंकि इन ही कामों के कारण परमेश्वर का क्रोध आज्ञा न मानने वालों पर भड़कता है। इसलिए तुम उन के सहभागी न हो (5:5-7)।

हमारा संसार हमें बता रहा है, ''तुम्हें अधिकार है कि जो चाहो करो! विवाहपूर्वक सैक्स में कोई बुराई नहीं है।'' ऐसे विश्वासों को मानने का दावा करने वाले लोगों की दिलचस्पी केवल अपनी ही शारीरिक इच्छाओं की पूर्ति करने में है। पौलुस ने संसार के फलसफे से भ्रमित होने से बचने की चेतावनी दी। संसार के लोग रोगों से स्वतन्त्रता और आज़ादी की बातें करते हैं पर ऐसी हर सोच आत्मकेन्द्रित है। पौलुस कह रहा था, ''ऐसी बातों पर विश्वास न करो। अन्त में परमेश्वर का क्रोध उन सब पर पड़ेगा, जो विकृत प्रेम से चलते हैं चाहे वह अपने आपको मसीही ही कहते हों। ईश्वरीय प्रेम के उस नमूने में बने रहो जो यीशु ने तुम्हें दिखाया है।''

2. *ज्योति की संतान* (5:8-14)। ''क्योंकि तुम तो पहले अंधकार थे, परन्तु अब प्रभु में ज्योति हो, सो ज्योति की सन्तान की नाईं चलो ... और यह परखो, कि प्रभु को क्या भाता है'' (5:8-10)। ज्योति सच्चाई का प्रतीक है। एक समय था जब हमारे जीवनों की पहचान उस सब से थी जो ज्योति नहीं है (5:8)। हम आत्मिक अंधकार में चलते थे और वे काम करते थे जो उस सब के विरुद्ध थे जो परमेश्वर को दर्शाते हैं। अब यीशु के पीछे चलकर हमारी आंखें खुल गई हैं और हम सच्चाई में चलते हैं। हम उन झूठे मूल्यों और फिलास्फियों को पहचान जाते हैं जो विवाहों, सम्बन्धों और कैरियर को तबाह कर देते हैं। अब हम यह नहीं कहते कि ''मुझे इस में कोई बुराई नज़र नहीं आती,'' क्योंकि हमारी आंखें पाप को वैसे ही देखती हैं जैसा यह है।

(1) हमारी खूबियां (5:9)। अब हमारे जीवनों की पहचान की तीन विशेषताएं हैं जो अंधकार में से ज्योति में बदल गए हैं। पहली पहचान ''भलाई'' है। कड़वाहट के स्थान पर (4:31), हमारे जीवन अब सक्रिय परोपकार से परिपूर्ण हैं। हम दूसरों के जीवनों में आवश्यकताओं को ढूंढ़कर उन्हें पूरा करते हैं। दूसरा, ''ज्योति की संतान'' की पहचान अब ''धार्मिकता'' से भी होती है। हम वही करते हैं जो सही है क्योंकि ऐसा करने से परमेश्वर को महिमा मिलती है। अब जब कि हम वैसा देख सकते हैं जैसा परमेश्वर देखता है और वैसा न्याय कर सकते हैं जैसा वह करता है, तो हमें वैसे ही रहना चाहिए जैसे वह चाहता है कि हम रहें। ज्योति का तीसारा फल ''सच्चाई'' है। पुराना जीवन कपट और झूठ से भरा हुआ था। अब हमें सच्चाई, वफ़ादारी, ईमानदारी और विश्वसनीयता वाला जीवन जीना आवश्यक है।

हम ज्योति की संतान धर्म के काम करने के द्वारा नहीं बनते हैं। यह बिल्कुल उलट है। कुछ लोगों के मन में यह गलत धारणा है कि यदि वे इतनी भलाई कर लें तो उनका उद्धार हो जाएगा।

सच्चाई यह है कि पहले हम ज्योति की संतान बनते हैं और फिर हमारे अन्दर भलाई, धार्मिकता और सच्चाई का फल आता है। यह उद्धार पाए होने का परिणाम हैं, कारण नहीं।

(2) हमें आज्ञा। ''अंधकार के निष्फल कामों में सहभागी न हो'' (5:11)। दो बार पौलुस ने उन निष्फल कामों की सूची दी जिन से मसीही लोगों को बचने की आज्ञा दी गई है (4:17-31; 5:3, 4)। हमें अंधकार में रहने वालों के साथ संगति नहीं करनी चाहिए।

ऐसे कामों से बचने की हमारी आवश्यकता का कारण यह है कि वे ''निष्फल'' हैं। पौलुस ने एक प्रकार के फल को दूसरे प्रकार के फल के बीच अन्तर नहीं किया। यह तो फल होने और फल न होने में अन्तर है। पुराने जीवन के काम फलहीन और बंजर हैं, उस जीवन में सदा रहने वाली शांति या संतुष्टि नहीं है। फलहीन काम हमें अपनी क्षमता के अनुरूप जीने में सहायता नहीं करते। पापपूर्ण कार्य बहुत वचन देते हुए चलते हैं परन्तु समय उन्हें केवल खोखले दावे साबित करता है।

आज्ञा स्पष्ट है कि हम अंधकार के प्रबन्ध से कोई सम्बन्ध न रखे है। परमेश्वर का अनुसरण करने वालों के रूप में हमें उस ज्योति में चलना आवश्यक है जो हमें दी गई है।

(3) हमें आदेश। ''बरन उन पर उलाहना दो। क्योंकि उन के गुप्त कामों की चर्चा भी लाज की बात है ...'' (5:11-13)। अंधकार के कामों में से निकलकर हमें अपने आपको संसार से अलग नहीं करना है। बल्कि हमें संसार के अंधकार पर रौशनी डालने को कहा गया है। संसार को यह पता नहीं है कि सही ढंग से काम कैसे करना है, क्योंकि यह अंधकार में रहता है। हमें यह समझाते हुए कि जैसा हम करते हैं वैसा कैसे और क्यों करना है, अपनी सृष्टि के लिए परमेश्वर की अन्तिम इच्छा को प्रकट करते हुए आदेश दिया गया है।

आदेश का पालन करने के लिए लोगों से बात करना आवश्यक है कि जो वे कुछ कर रहे हैं, वह गलत है, जो कि आसान नहीं है। यूहन्ना ने कहा, ''और दण्ड की आज्ञा का कारण यह है कि ज्योति जगत में आई है, और मनुष्यों ने अंधकार को ज्योति से अधिक प्रिय जाना क्योंकि उन के काम बुरे थे। क्योंकि जो कोई बुराई करता है, वह ज्योति से बैर रखता है, और ज्योति के निकट नहीं आता, ऐसा न हो कि उसके कामों पर दोष लगाया जाए'' (यूहन्ना 3:19, 20)।

सारांश। हमें एक दुष्ट संसार में परमेश्वर का अनुसरण करने के लिए बुलाया गया है। इसका अर्थ उन लोगों के पास ज्योति और प्रेम को ले जाने वाले बनना है जो इन में से किसी को भी जानते नहीं हैं। हम दूसरों के प्रति ''तुम से पवित्र'' व्यवहार को बढ़ावा देने की बात नहीं करेंगे। हम पाप को इस प्रकार से सामने लाते हुए कि लोग मन फिराने के लिए आगे आएं, प्रेम से सत्य बताने की बात करेंगे। जब हम ऐसा करते हैं तो हम सचमुच में स्वर्ग में अपने पिता के जैसे बन रहे होते हैं।

क्रिस बुलर्ड

टिप्पणियां

[1]एंड्रयू टी. लिंकोन, *इफिसियंस,* वर्ड बिब्लिकल कमैंट्री, अंक 42 (डलास: वर्ड बुक्स, 1990), 326. [2]यशायाह 9:2; 60:1, 2; यूहन्ना 1:4-9; 3:19-21; 8:12; 9:5; 12:35-46; 1 यूहन्ना 1:5; 2:8. [3]एथलबर्ट

डब्ल्यू. बुलिंगर, *ए क्रिटिकल लैक्सिकन एंड कन्कोर्डेंस टू द इंग्लिश एंड ग्रीक न्यू टैस्टामैंट* (लंदन: सेमुएल बैगस्टर एंड सन्स, तिथि नहीं; रिप्रिंट, ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: ज़ौंडरवन पब्लिशिंग हाउस, रिजेंसी रेफरेंस लाइब्रेरी, 1975), 338. [4]स्पायरस ज़ोडिएट्स, सम्पा., *द कम्पलीट वर्ड स्टडी न्यू टैस्टामेंट* 2रा संस्क. (चटनूगा, टैनिसी: एएमजी पब्लिशर्स, 1991), 884, 904. [5]लिंकोन, 328. [6]ज़ोडिएट्स, 906. [7]लिंकोन, 329. [8]वही, 330. [9]*द एक्सपोज़िटर'स ग्रीक टैस्टामेंट,* संपा. डब्ल्यू. रॉबर्टसन निकोल (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1967), 3:358 में एस. डी. एफ. सैलमण्ड, ''द एपिस्टल टू द इफिसियंस।'' [10]वही, 360.

[11]लिंकोन, 335. [12]परमेश्वर के उद्धार और उसके न्याय में पुराने नियम के अन्तरों के लिए देखें यशायाह 9:2; 10:17; 42:6, 7, 16; 47:5; 60:1–3. परमेश्वर की सामर्थ और शैतान की सामर्थ और परमेश्वर के लोगों और जो उसके नहीं हैं उन में नये नियम के अन्तरों के लिए देखें प्रेरितों 26:18; कुलुस्सियों 1:12, 13; 1 पतरस 2:9, 10.